Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(3), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

वैदिक संहिताओं में रुद्र का स्वरूप

डॉ सोनिका

हिंदू धर्म की समस्त शाखा तथा संप्रदायों के मूलभूत विचारों के बीज वैदिक संहिता में पाए जाते हैं। भारतीय वैदिक साहित्य विश्व की प्राचीनतम ज्ञान-परम्पराओं में से एक है। इस साहित्य में प्रकृति,देवता, मानव और ब्रह्माण्ड के विविध आयामों का अत्यन्त गहन एवं दार्शनिक विवेचन प्राप्त होता है। वैदिक ऋषियों ने अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियों और प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीकात्मक रूपों को देवताओं के माध्यम से व्यक्त किया है। इन्हीं देवताओं में रुद्र का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण और विशिष्ट है। वैदिक संहिताओं में रुद्र का स्वरूप बहुआयामी, रहस्यमय तथा अत्यन्त प्रभावशाली रूप में चित्रित हुआ है। वैदिक वाङ्मय के अंतर्गत प्रमुख रूप से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद की संहिताएँ आती हैं। इन संहिताओं में रुद्र देवता का वर्णन विभिन्न रूपों में प्राप्त होता है। कहीं वे उग्र और प्रचण्ड देवता के रूप में वर्णित हैं, तो कहीं वे करुणामय, रोगनाशक तथा कल्याणकारी देवता के रूप में पूजित हैं। वैदिक ऋषियों ने रुद्र को ऐसी दिव्य शक्ति के रूप में देखा है जो एक ओर भयंकर और दण्ड देने वाली है, तो दूसरी ओर कृपालु, रक्षक तथा जीवनदायिनी भी है। यही द्वैतात्मक स्वरूप रुद्र की विशेषता है। इस शोध पत्र में रुद्र के स्वरूप के विषय में विस्तार से वर्णन किया जाएगा ।

रुद्र का स्वरूप- ऋग्वेद में रूद्र को गौर वर्ण के तेजस्वी युवक के रूप में चित्रित किया गया है जो अपने धनुष एवं बाणों को लेकर विचरण करते हैं तथा क्रुद्ध होने पर मनुष्यों तथा पशुओं का विनाश कर डालते हैं । इनका रूप अत्यंत तेज युक्त है ।त्वेषं रूपं नमसा नि ह्वयामहे [1]। ऋग्वेद में रुद्र के विषय में कहा है -

यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते ।
श्रेष्ठो देवानां वसु:[2] ।

अर्थात् रूद्र को सूर्य के समान तेजस्वी , सुवर्ण के समान कांतिमय और देवताओं में सबसे श्रेष्ठ बताया गया है, जो सभी को निवास स्थान प्रदान करने वाला है। इनके शरीर का रंग भूरा माना गया है । इनके अंग पुष्ट एवं दृढ़ है । रुद्र का वाहन रथ एवं शस्त्र धनुष है । वाजसनेयी संहिता में रुद्र के धनुष का नाम पिनाक बताया गया है “अवततधन्वा पिनाकावस: ” । रुद्र के धनुष के अलावा अन्य अस्त्र वज्र एवं विद्युत का उल्लेख भी ऋग्वेद में प्राप्त होता है । रुद्र के स्वरूप की जो विशेषता उन्हें अन्य देवताओं से अलग करती है वह उनका भयानक उग्र तथा संहारकरूप है ।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(3), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

रुद्र शब्द का अर्थ - वैदिक रुद्र का आधिभौतिक स्वरूप क्या था ? इस विषय पर विद्वानों में मतभेद है। परंतु इसी के स्वरूप पर रुद्र शब्द का अर्थ निर्भर करता है। शतपथ ब्राह्मण में रुद्र शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ रुद् धातु से किया गया है जिसका अर्थ रुलाना या दुख देना है। जब मनुष्य मरता है तो उसके शरीर से दस प्राण और आत्मा निकलती है इस शरीर को त्यागते समय वे संबंधी जनों को रुलाने वाले है इसलिए उन्हें रूद्र कहा गया है [3]। स्वामी दयानन्द ने भी रुद्र शब्द का अर्थ रुलानेवाला कहा है। उनके अनुसार पापियों एवं दुष्टों को रुलाने के कारण परमात्मा का ही नाम रुद्र हैं। महाभारत के शान्तिपर्व में दक्ष शिव की स्तुति करते हुए कहते हैं कि 'रु' संकट को कहते हैं और उसको दुर करने के कारण आपका नाम रुद्र हैं[4]।

रुद्र के लिए प्रयुक्त विशेषण-वैदिक वाङ्मय में रुद्र का स्वरूप अत्यंत व्यापक और बहुआयामी रूप में चित्रित हुआ है। वे केवल एक उग्र और संहारक देवता ही नहीं, बल्कि करुणा, संरक्षण और चिकित्सा के अधिष्ठाता भी हैं। विशेष रूप से ऋग्वेद में रुद्र के लिए अनेक विशेषणों का प्रयोग हुआ है, जो उनके जटिल और समन्वित व्यक्तित्व को उजागर करते हैं।रुद्र को "उग्र[5]" कहा गया है, जो उनके प्रचंड और तेजस्वी स्वरूप का द्योतक है। यह उग्रता केवल विनाश की शक्ति नहीं, बल्कि अधर्म और अनाचार के विनाश की दैवी शक्ति का प्रतीक है। इसी के साथ उन्हें"घोर[6]" भी कहा गया है, जो उनके भयावह रूप को व्यक्त करता है; किंतु यह भय केवल दुष्टों के लिए है, सज्जनों के लिए नहीं।इसके विपरीत, रुद्र का एक अत्यंत कोमल और कल्याणकारी रूप भी है, जिसके कारण उन्हें "शिव[7]" और "शंकर" कहा गया है। "शिव" का अर्थ है–मंगलकारी, और "शंकर[8]" का अर्थ है–कल्याण करने वाला। यह विशेषण दर्शाते हैं कि रुद्र केवल विनाश के देवता नहीं, बल्कि जीवन में सुख, शांति और समृद्धि प्रदान करने वाले भी हैं।रुद्र को "पशुपति[9]" के रूप में भी संबोधित किया गया है, जिसका अर्थ है समस्त प्राणियों के स्वामी और रक्षक। यहाँ "पशु" का तात्पर्य केवल पशुओं से नहीं, बल्कि समस्त जीवधारियों से है। इस प्रकार रुद्र समस्त सृष्टि के संरक्षक के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं। "भव" और "शर्व" जैसे विशेषण उनके सृजन और संहार, दोनों रूपों को प्रकट करते हैं–वे जीवन के उद्गम भी हैं और उसके संहारक भी।रुद्र के स्वरूप की विशेषता उनके तपस्वी रूप में भी दिखाई देती है। उन्हें "कपर्दिन्[10]" कहा गया है, अर्थात् जटाधारी, जो उनके तप और वैराग्य का प्रतीक है। "गिरीश" और "गिरिशन्त" जैसे विशेषण उनके पर्वतों में निवास करने वाले रूप को व्यक्त करते हैं, जिससे उनका संबंध प्रकृति और एकांत साधना से स्पष्ट होता है।रुद्र के एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष का परिचय उनके "भेषजम्[11]" विशेषण से मिलता है। इसका अर्थ है औषधि या रोगनाशक। वैदिक ऋषियों ने रुद्र को रोगों का नाश करने वाला और स्वास्थ्य प्रदान करने वाला देवता माना है। इस प्रकार वे एक दिव्य वैद्य के रूप में भी पूजनीय हैं।"त्र्यम्बक[12]" विशेषण उनके त्रिनेत्र स्वरूप का संकेत देता है, जो ज्ञान, क्रिया और इच्छा–इन तीनों शक्तियों का प्रतीक है। वहीं "शिवतम्[13]" और "नीलग्रीव[14]"

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(3), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

जैसे विशेषण उनके विशिष्ट शारीरिक स्वरूप को दर्शाते हैं, जो आगे चलकर शिव के रूप में और अधिक विकसित हुआ। इसके अतिरिक्त रूद्र को ऋदुदरः[15],सुशिप्रः[16], दिवोवराह[17], पुरुरुपः[18], यज्ञसाधः[19], मारुत्वान् , वृषभ , जलाष इत्यादि अनेक विशेषण से संबंधित किया गया है।इस प्रकार वैदिक साहित्य में रुद्र के लिए प्रयुक्त विशेषण उनके बहुरंगी व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करते हैं वे एक साथ उग्र भी हैं और शिव भी, संहारक भी हैं और रक्षक भी, भयावह भी हैं और करुणामय भी। यही द्वंद्वात्मक किन्तु संतुलित स्वरूप रुद्र को वैदिक देवताओं में एक अद्वितीय स्थान प्रदान करता है।

शतरुद्रिय और रुद्र -यजुर्वेद का एक पूरा अध्याय ही रुद्र की स्तुति में प्रयुक्त किया गया है ।यह रूद्राध्याय यजुर्वेद के अनेकों संहिताओं में थोड़े बहुत अंतर के साथ उपलब्ध होता है । वाजसनेयी संहिता का 16 अध्याय रूद्राध्याय के नाम से विख्यात है । इसमें हमें रुद्र के तत्कालीन व्यक्तित्व की संपूर्ण रुप रेखा प्राप्त होती है । विष्णु या शिव सहस्त्रनाम जैसे स्रोतों की भांति यहां भी रूद्र को सैकड़ो विशेषणों तथा उपाधियों से विभूषित किया गया है । स्थूल अथवा सूक्ष्म ,भौतिक अथवा आध्यात्मिक कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो रुद्र से संबंधित ना हो और जिस पर रुद्र का आधिपत्य ना हो यद्यपि रुद्र के लिए शिव विशेषण यहां कई बार प्राप्त होता है और उन्हें 'मयोभु', 'शंकर' तथा 'मीढुष्टम' भी कहा गया और फिर भी रुद्र के भयानक रूप से भयभीत होकर उसे अपने कल्याण रूप को दिखाने की प्रार्थना की गई है । शिव का शायद ही कोई ऐसा प्रमुख विशेषण होगा जिसको शतरुद्रिय में रुद्र से संबंधित ना किया गया हो। रुद्र का अलौकिकस्वरूप यजुर्वेद के समय अत्यंत प्रबल था और उन्हें मानव समाज के क्या उच्च क्या निम्न सभी प्रकार के वर्गों का स्वामी माना जाता था ।

रुद्र के गण -शतरुद्रिय के प्रथम 53 मन्त्रों में रुद्र की विशेषताओं का गुणगान करने के बाद आगे के 13 मन्त्रों में रुद्रगण का वर्णन किया गया है ।ये रुद्राः रुद्र के आधिपत्य में रहने वाले उनके अनुचर हैं । इन रुद्रों की लगभग वे ही विशेषताएं बताई गई है जो प्राय रुद्र के लिए बताई गई है । उनकी संख्या गणनाहीन है । वे भूमि , समुद्र ,अंतरिक्ष तथा आकाश सभी स्थानों में व्याप्त है । इन गणों का उल्लेख अथर्ववेद में प्राप्त होता है ।यजुर्वेद के अंतर्गत सभी गणों के स्वामी को रूद्र बताया गया है। शतरुद्रिय में ही ' नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च[20]'कहकर गण एवं गणपति दोनों की वंदना की गई है । वाजसनेयी संहिता में जो ' गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति हवामहे[21] आदि प्रसिद्ध मंत्र आते हैं जो वे भी संभवत रुद्र और उनके गणों के ही बोधक है। रुद्र के इन गणों का बाद के साहित्य में बड़ा विचित्र तथा मनोरंजन वर्णन है। इनमें से कोई बौना, कोई लंबा, कोई कुबड़ा तो कोई मोटा है । किसी का मुख व्याघ्र की भांति तो किसी का हाथी की तरह है ,कोई अजमुख और कोई मेषमुख है । मत्स्य पुराण की कथा के अनुसार विवाह उपरांत घर आई हुई पार्वती शिव के इन विचित्र गणो को देखती हैं और

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(3), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

उत्सुकता पूर्ण शिव से इनकी संख्या आदि के बारे में पूछती है शिव उत्तर देते हैं कि ये गण करोड़ों की संख्या में है ये इतने विविध कर्म और गुण वाले हैं कि उनकी गणना नहीं हो सकती ।

रुद्रदेव परमतत्त्व के रूप में -

अथर्ववेद में कहा गया है कि अग्नि, वायु, विद्युत, सूर्य आदि प्रकाश वाले समूह में जो रुद्र पुरुषरूप से प्रविष्ट हुआ है तथा जो जल ,चंद्रमा ,नक्षत्र आदि में व्यापक है वही प्राणियों के हृदय ,कंठ और चक्षु में तथा वनस्पतियों के अंतर्गत अन्य घास आदि में स्थित है इन नाम रुपात्मक समस्त चराचर को उत्पन्न करके पालन करने तथा अंतकाल में इनका संहार करने में जो समर्थ है वह अद्वितीय व्यापक रुद्र के लिए नमस्कार है।

योऽग्नौ रुद्रो योऽप्स्वन्तर्य ओषधीवरुध आविवेश।
य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृषे
तस्मै रुद्राय नमोऽस्त्वग्नये[22] ।

अथर्ववेद में कहा गया है कि जो रूद्र है वही महादेव है वही अग्नि व सूर्य है। अर्थात विभिन्न देव एक ही सत्ता रुद्रदेव की अभिव्यक्तियां हैं। शिव ही मोक्षदाता है इसलिए ऋग्वेद तथा यजुर्वेद में आए हुए मंत्र में त्र्यंबक से मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गई है। इसी प्रकार यजुर्वेद में कहा गया है-

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च[23]।।

अर्थात कल्याण एवं सुख के मूल स्रोत भगवान शिव को नमस्कार है। मोक्ष के विस्तार करने वाले तथा सुख के विस्तार करने वाले भगवान शिव को नमस्कार है। मंगल स्वरूप और मंगलमयता की सीमा भगवान शिव को नमस्कार है । मोक्ष सुख एवं लौकिक सुख प्रदान करने वाले भगवान शिव को नमस्कार है।

निष्कर्ष

वैदिक वाङ्मय, विशेषतः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद की संहिताओं के सम्यक् अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रुद्र का स्वरूप अत्यन्त बहुआयामी, गूढ़ एवं दार्शनिक गहराई से युक्त है। वे केवल एक सीमित कार्य-क्षेत्र वाले देवता नहीं, बल्कि प्रकृति, जीवन, भय, करुणा और कल्याण के समन्वित प्रतीक हैं।प्रथम दृष्टया रुद्र का स्वरूप उग्र, भयानक और संहारक शक्ति के रूप में प्रकट होता है। वे धनुष-बाणधारी हैं, जिनकी प्रचण्डता से रोग, दुःख तथा आपदाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इस रूप में वे प्रकृति की अनियंत्रित और विनाशकारी शक्तियों–जैसे तूफान, आकाशीय विद्युत्, महामारी आदि–के प्रतीक प्रतीत होते हैं। वैदिक ऋषियों ने इस उग्रता को स्वीकार करते हुए उनसे प्रार्थना की है कि वे अपने "घोर" स्वरूप को संयमित करें और मानवता पर कृपा दृष्टि बनाए रखें।किन्तु यही रुद्र केवल संहारक नहीं हैं। उनके व्यक्तित्व का दूसरा पक्ष अत्यन्त कल्याणकारी, करुणामय और जीवनरक्षक है। वैदिक मंत्रों में

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(3), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

उन्हें "शिव" "शम्भु" और "मयोभव" जैसे विशेषणों से संबोधित किया गया है। वे औषधियों के स्वामी हैं, रोगों के नाशक हैं तथा दीर्घायु और आरोग्य प्रदान करने वाले देवता हैं। इस प्रकार रुद्र का स्वरूप विरोधाभासी न होकर समन्वयात्मक है–जहाँ उग्रता और करुणा, दोनों का अद्भुत संतुलन है।रुद्र का "पशुपति" स्वरूप भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वे केवल मनुष्यों के ही नहीं, बल्कि समस्त प्राणिमात्र के रक्षक और स्वामी हैं। इससे वैदिक दृष्टि में समस्त सृष्टि के प्रति एक समग्र और सहानुभूतिपूर्ण भाव प्रकट होता है। रुद्र का यह रूप उन्हें सार्वभौमिक देवता के रूप में प्रतिष्ठित करता है, जो जीवन के प्रत्येक स्तर से सम्बद्ध हैं।दार्शनिक दृष्टि से रुद्र का स्वरूप सृष्टि के द्वैत और अद्वैत दोनों आयामों को अभिव्यक्त करता है। वे भय और अभय, विनाश और संरक्षण, दण्ड औरअनुग्रह इन सभी के समन्वय का प्रतीक हैं। यह वैदिक चिंतन की उस गहनता को दर्शाता है, जिसमें सृष्टि की प्रत्येक शक्ति को एक ही परम सत्य के विभिन्न रूपों के रूप में देखा गया है। अन्ततः यह कहा जा सकता है कि वैदिक संहिताओं में रुद्र का स्वरूप केवल एक देवता की उपासना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रकृति और मानव जीवन के गूढ़ रहस्यों का दार्शनिक निरूपण है। यही कारण है कि उत्तरवैदिक काल में यही रुद्र विकसित होकर भगवान शिव के रूप में प्रतिष्ठित हुए, जो सृष्टि के संहारक होने के साथ-साथ परम कल्याणकारी और मोक्षदाता भी हैं।इस प्रकार उनका स्वरूप समग्रता, संतुलन और सार्वभौमिकता का प्रतीक है, जो वैदिक दर्शन की गहनता और व्यापकता को पूर्णतः अभिव्यक्त करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1.ऋग्वेद 1/114/5
2.ऋग्वेद 1/43/5
3. शतपथ ब्राह्मण 11/6/3/7
4. महाभारत शांति पर्व
5. ऋग्वेद 2/33/9
6. ऋग्वेद 2/33/10
7. यजुर्वेद 16/51
8. यजुर्वेद 16/41
9. अथर्ववेद 2/34/1
10. ऋग्वेद 1/114/1
11. ऋग्वेद 2/33/7
12.ऋग्वेद 7/59/12

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(3), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

13. यजुर्वेद 16/51
14.शुक्ल यजुर्वेद 16/7
15.ऋग्वेद 2/33/5
16.वहीं
17.ऋग्वेद 1/114/5
18.ऋग्वेद 2/33/9
19.ऋग्वेद 1/114/4
20.शुक्ल यजुर्वेद 16/25
21.वाजसनेयी संहिता 23/19
22. अथर्ववेद 7/87/1
23. यजुर्वेद 16/41